एक दरवाज़े के खुलने की कहानी

संजय जोशी

इंग्लैंड की एक कम्पनी रैगडॉल बच्चों से जुड़े विषयों की किताबें छापती है, गाने तैयार करती है और लघु फिल्में बनाती है। इससे जुड़े ज़्यादातर लोग कम्पनी खोलने से पहले बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में काम करते थे। 2003 में रैगडॉल ने सारी दुनिया के बच्चों के सतरंगे संसार को परदे पर उतारने की एक योजना पर काम शुरू किया। मकसद था 5 मिनट की लघु फिल्म के ज़रिए बच्चों के संसार को जानना-समझना। इस काम के लिए अलग-अलग देशों के फिल्मकारों से सम्पर्क किया गया। आखिरकार 17 देशों के फिल्मकार अपने-अपने देशों के बच्चों की

दुनिया दिखाने को तैयार हो गए। अलग-अलग देशों के लिए कोई एक विषय चुनना एक पेचीदा मसला था। रैगडॉल के निर्माताओं ने आपसी सूझबूझ से एक विषय पर सहमति हासिल की। इस प्रोजेक्ट की थीम थी – बच्चों का अपने घर के दरवाज़े से बाहर निकलकर पाँच मिनट के भीतर अपने आसपास की दुनिया को महसूस करना। 5 मिनट की 17 देशों की इस लघु फिल्म श्रृँखला को नाम दिया गया *ओपन अ डोर* यानी एक दरवाज़े के खुलने की कहानी। दरवाज़े के खुलने को असल में दुनिया के खुलने जैसा समझना चाहिए। इन 17 देशों में भारत, अफ्रीका, जापान, अमरीका, मंगोलिया, ईरान, चीन, क्यूबा, इंग्लैंड आदि देश शामिल हैं।

पहली ही कहानी *ओपन अ डोर इन अफ्रीका* में दो छोटे भाई-बहन अपनी खिलौना गाड़ी को सड़क पर दौड़ाते हुए पड़ोस की चाची से टकरा जाते हैं। इस टक्कर में चाची के हाथ से अण्डे छिटककर ज़मीन पर गिर जाते हैं। चाची थोड़ा खीझती हैं। बच्चे सॉरी कहते हैं। बच्चों के घर के पिछवाड़े मुर्गी का दड़बा है। वे उससे चाची के लिए मुर्गी के अण्डे ले आने की जुगत लगाते हैं। अगले दृश्य में वही चाची कपड़े सुखा रही हैं। बच्चे उनका ध्यान अपनी तरफ खींचने के लिए खाँसते हैं। चाची बच्चों की चिन्ता से बहुत खुश होती हैं, बहुत सारा आशीष देती हैं। पर, जब वो हड़बड़ी में अण्डे स्वीकार करती हैं तो एक बार फिर अण्डे बिखरकर टूट जाते हैं। अब चाची के सॉरी कहने की बारी है। बच्चे और चाची दोनों अपनी-अपनी गलतियों से सीखते हैं। दरवाज़ा बन्द होता है और दूसरे देश की कहानी शुरू होती है। ऐसी ही एक मज़ेदार कहानी *ओपन अ डोर इन अमेरिका* में घटती है। एक छोटी बच्ची

अपनी माँ के साथ बाज़ार घूमने निकली है। अभी वे कुछ कदम ही आगे बढ़ते हैं कि बच्ची को हिचकियाँ आने लगती हैं। फिर इन हिचकियों को रोकने के उपाय शुरू होते हैं। कभी बच्ची को खूब सारा पानी पिलाया जाता है तो कभी उलटा लटका दिया जाता है। लेकिन हिचकी है कि रुकने का नाम ही नहीं लेती। हर उपाय के बाद लगता है कि अब तो हिचकी रुक ही जाएगी लेकिन तभी एक आवाज़ आती है फिर किसी नए उपाय की खोज शुरू हो जाती है। मज़े की बात है कि पाँच मिनट खत्म होते-होते दर्शकों को भी हिचकी आने लगती है।

सभी सत्रह फिल्मों की जानकारी देना यहाँ सम्भव नहीं हैं। लेकिन एक बात जो इन छोटी फिल्मों को देखने के बाद समझ में आती है वो यह कि देशों की सीमाओं से परे बच्चों का संसार एक है।

सत्रह फिल्मों का यह गुलदस्ता *ओपन अ डोर* इंग्लैंड की कम्पनी रैगडॉल से खरीदा जा सकता है।

रैगडॉल की वेबसाइट है – www.ragdoll.co.uk